पाणिनीय और शाकटायनव्याकरण : तुलनात्मक विवेचन

डॉ० वागीश शास्त्री,
निदेशक, अनुसन्धान संस्थान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

लोकमें पाणिनीय व्याकरणकी प्रतिष्ठा उसकी संक्षिप्त शैली तथा सर्वाङ्गपूर्णताके कारण हुई। पूर्ववर्ती अतिविस्तृत ऐन्द्र इत्यादि व्याकरणोंको अल्प मेधावी छात्र कण्ठस्थ नहीं कर पाते थे। कुछ ऐसे व्याकरण थे, जो केवल विशिष्ट प्रकरणोंके ही नियम बताते थे। अतः सर्वाङ्गपूर्णताके न होनेके कारण केवल उनके अध्ययनसे छात्र व्याकरणके सम्पूर्ण नियमोंको नहीं जान पाते थे। ऐसी स्थितिमें ईसापूर्व पाँचवीं शताब्दीके लगभग पाणिनिने पूर्ववर्ती सम्पूर्ण व्याकरणोंका अनुशीलन करके संक्षिप्त, साङ्गोपाङ्ग (वेदलोकोभयात्मक) सन्देहरहित व्याकरण बनाया और उसे ३७७९ सूत्रोंमें बाँध दिया। धातुपाठ, गणपाठ, उणादि, नामालिङ्गानुशासन, शिक्षा इत्यादि उसके खिलपाठ हैं। किन्तु सम्प्रति उपलब्ध उणादि पाणिनिका नहीं है।

पाणिनिने भूत, भविष्य, वर्तमान इत्यादि कालोंकी कोई परिभाषा नहीं बनाई। उनसे लोक परिचित था। अतः उनकी परिभाषाएँ देकर व्याकरणका कलेवर बढ़ाना पाणिनिने उचित नहीं समझा। 'लिङ्गमशिष्यं लोकाश्रयत्वात्, कह कर पाणिनिने लिङ्गका अनुशासन करना भी उचित नहीं समझा। अतः उनके नाम पर प्राप्त लिङ्गानुशासन विचारणीय है। इतनी सूक्ष्मेक्षिका रखने पर भी पाणिनिकी केवल अष्टाध्यायी संस्कृत व्याकरणके सम्पूर्ण नियमोंका बोध करानेमें समर्थ नहीं हो सकी। तदर्थ कात्यायनको अष्टाध्यायीके सूत्रों पर वार्त्तिक लिखने पड़े ताकि उसमें छूटे नियमोंका ज्ञान हो सके। किन्तु जब पाणिनीय सूत्रों पर केवल कात्यायनीय वार्त्तिकोंके रचे जाने मात्रसे उसकी लोकोपयोगिता सिद्ध नहीं हुई, तब पतञ्जलिको अपना महाभाष्य लिखना पड़ा।

पाणिनिने सूत्रोंकी संक्षिप्तताका आश्रय इसलिए लिया था कि जिज्ञासु जन अल्प समयमें संस्कृत व्याकरणका ज्ञान कर सकें। किन्तु यह **'त्रिमुनिव्याकरणम्'** इतना पृथुल हो गया कि बारह वर्षोंमें विद्यार्थी केवल व्याकरणका ही अध्ययन कर पाता था, जो विशाल संस्कृत वाङ्मयमें प्रवेश करनेके लिए साधनमात्र था।

चन्द्रगोमीके अनन्तर जैन सम्प्रदायका इस ओर ध्यान गया और सर्वतः प्रथम पूज्यपाद जैनेन्द्रने छठी शताब्दीमें **'त्रिमुनिव्याकरण'**के आधारपर जैनेन्द्र व्याकरणकी रचना की। यद्यपि इसमें पाणिनीय व्याकरणसे भी प्राचीन व्याकरणोंके तत्त्व सुरक्षित हैं, तथापि सम्पूर्ण रचना पर पाणिनीय व्याकरणका प्रभाव स्पष्ट है।

जिस उद्देश्यको लेकर **जैनेन्द्र व्याकरण** की रचना की गयी थी, वह सिद्ध नहीं हुआ। संस्कृत भाषाको सरल प्रक्रियासे सिखा देनेवाले व्याकरणकी प्रतीक्षा जिज्ञासु तब भी कर रहे थे। यद्यपि शर्ववर्माने प्रथम शताब्दीमें प्रक्रियात्मक पद्धति पर आश्रित व्याकरणकी रचना कर मार्ग दिखा दिया था, तथापि **'त्रिमुनिव्याकरण'** की कसौटी पर लोकने उसे खरा नहीं पाया था। फलतः वह सर्वत्र एकच्छत्र रूपमें प्रचार नहीं पा सका।

तीन सौ वर्षोंके अनन्तर श्वेताम्बरीय जैन विद्वान् महाश्रमण-संघाधिपति पाल्यकीर्ति शाकटायनने **'शाकटायनव्याकरण'** की रचना कर पूर्ववर्ती लौकिक व्याकरणोंकी न्यूनताओंको दूर करनेका प्रयत्न किया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा उसे सर्वाङ्गपूर्ण बनानेका स्तुत्य कार्य किया। लौकिक संस्कृतके नियमोंको संक्षेप, सरलता और सम्पूर्णताकी दृष्टिसे बतानेके लिए उन्होंने इसकी रचना की थी।

सरलताकी दृष्टिसे शाकटायनने अपने व्याकरणमें पाणिनीय अष्टाध्यायीके दो सूत्रोंसे लेकर नौ सूत्रों तकके स्थान पर केवल एक सूत्रकी रचना बड़ी ही कुशलतासे कर दी है। उनका वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है :—

१. दो सूत्रोंके स्थानपर एक सूत्र। यथा—

पाणिनि—'वृद्धस्य च पूजायाम्' (४।१।१६६), 'यूनश्च कुत्सायाम्' (४।१।१६७)

शाकटायन—'युवं वृद्धं कुत्सार्थे' (१।१।१६)

पाणिनि—'पुरोऽव्ययम्' (१।४।६७), 'अस्तं च' (१।४।६८)
शाकटायन—'अस्तं पुरोऽव्ययम्' (१।१।२९)

पाणिनि—'षष्ठी स्थानेयोगा' (१।१।४९), 'अलोऽन्त्यस्य' (१।१।५२)
शाकटायन—'षष्ठ्याः स्थानेऽन्ते लः' (१।१।४७)

पाणिनि—'ढो ढे लोपः' (८।३।१३), 'रो रि' (८।३।१४)
शाकटायन—'ढ्रो ढ्रि' (१।१।१३१)

२. दो सूत्रोंके स्थान पर दो मिश्रित सूत्र। यथा—

पाणिनि—'पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन' (२।२।११),
'क्तेन च पूजायाम्' (२।२।१२)

शाकटायन—'तृप्तार्थाव्ययनिर्धार्यडच्छत्रानश्मतिपूजाधारक्तैः' (२।१।५०) 'गुणैरस्वस्थैः' (२।१।५१)

पाणिनि—'घरूपकल्पचेलड्ब्रुवगोत्रमतहतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः' (६।३।४३),
'उगितश्च' (६।३।४५)
शाकटायन—'रूपकल्पङ्गोत्रमतहतचेलड्ब्रुवे ह्रस्वश्च वोगितः' (२।२।५२),
'ङ्योऽनेकाचः' (२।२।५३)

३. तीन सूत्रोंके स्थान पर एक सूत्र। यथा—

पाणिनि—'मनः' (४।१।११), अनो बहुव्रीहेः' (४।१।१२), 'डाबुभाभ्यामन्यरस्याम्' (४।१।१३)

शाकटायन—'मन्नन्बहुव्रीहेर्न्न च' (१।३।१२)

पाणिनि—'सम्बोधने च' (२।३।४७), 'सामन्त्रितम्' (२।३।४८), एकवचनं सम्बुद्धिः' (२।३।४९)
शाकटायन—'आमन्त्र्ये' (१।३।९९)

पाणिनि—'नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः' (५।४।११०), 'झयः (५।४।१११), 'गिरेश्च सेनकस्य' (५।४।११२)
शाकटायन—'गिरिनदीपौर्णमास्याग्रहायणीजयः' (२।१।१५५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. तीन सूत्रोंके स्थान पर दो सूत्र । यथा—

पाणिनि—'तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः' (५।१।१०१), 'योगाद्यच्च' (५।१।१०२), 'कर्मण उकञ्' (५।१।१०३)

शाकटायन—'योगादये शक्ते' (३।२।९१), 'योग्यकार्मुके' (३।२।९२)

५. चार सूत्रोंके स्थान पर एक सूत्र । यथा—

पाणिनि—'शूलोखाद्यत्' (४।२।१७), 'दघ्नष्ठक्' (४।२।१८), 'उदश्वितोऽन्यतरस्याम्' (४।२।१९), 'क्षीराड्ढञ्' (४।२।२०)

शाकटायन—'शल्योख्यक्षैरेयदाधिकौदश्वित्कौदश्वितम्' (२।४।२३८)

६. पाँच सूत्रोंके स्थान पर एक सूत्र । यथा—

पाणिनि—'इदमोर्हिल्' (५।३।१६), 'अधुना' (५।३।१७), 'दानीं च' (५।३।१८) 'सद्यः' (५।३।२२), समानस्य सभावः (वा०)

शाकटायन—सदैतर्ह्यधुनेदानीन्तदानीं सद्यः (३।४।१९)

पाणिनि—'समयाच्च यापनायाम्'(५।४।६०), 'दुःखात् प्रातिलोम्ये'(५।४।६४), 'निष्कुलान्निष्कोषणे' (६२), 'शूलात् पाके' (५।४।६५), सत्यादशपथे (५।४।६६) ।

शाकटायन—'दुःखनिष्कूलशूलसमयसत्यात् प्रातिकूल्यनिष्कोषपाकयापनाशपथे' (३।४।५३)

७. छः सूत्रोंके स्थान पर एक सूत्र । यथा—

पाणिनि—'मूर्तौ घनः' (३।३।७७), 'उद्धनोऽत्याधानम्' (३।३।८०), 'जपघनोऽङ्गम्' (३।३।८१), 'उपघ्न आश्रये' (३।३।८५), 'संघोद्धौ गणप्रशंसयोः' (३।३।८६), 'निघो निमित्तम्' (३।३।८७)

शाकटायन—'घनोद्धनापघनोपघ्ननिघोद्धसंघा मूर्त्यत्याधानाङ्गासन्ननिमित्तप्रशस्तगणाः' (४।४।२०) ।

८. आठ सूत्रोंके स्थान पर एक सूत्र । यथा—

पाणिनि—'वेः शालच्छङ्कटचौ' (५।२।२८), 'सम्प्रोदश्च कटच्' (५।२।२९), 'अवात् कुटारच्च' (३०), 'नते नासिकायाः संज्ञायां टीटञ्नाटञ्भ्रटचः' (५।२।३१), 'नेर्विडज्विरीसचौ' (३२), 'इनच् पिटच्चिकचि च' (३३), क्विलन्नस्य चिल् पिल् (वा०), उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः (३४)

शाकटायन—'विशालविशङ्कटविकटसंकटोत्कटप्रकटनिकटावकटावकुटारावटीटावनाटावभ्रटनिबिडनिबिरीसचिक्कचिकिनचिपिटचिल्लपिल्लचुल्लोपत्यकाधित्यकाः' (३।३।१०६)

९. नौ सूत्रोंके स्थान पर एक सूत्र । यथा—

पाणिनि—'वशं गतः' (४।३।८६), 'धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते' (४।४।९२), 'मूलमस्यार्बहि' (८८), 'संज्ञायां धेनुष्या' (४।४।८९), 'संज्ञायां जन्याः' (४।४।८२), 'गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः' (९०), 'नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसंमितेषु' (९१), 'हृदयस्य प्रियः' (४।४।९५), 'बन्धने चर्षौ' (४।४।९६)

शाकटायन—'वश्यपथ्यवयस्यधेनुष्यगार्हपत्यजन्यधर्म्यहृद्यमूल्यम्' (३।२।१९५) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक ओर जहाँ शाकटायनने पाणिनिके एक नियमवाले छोटे-छोटे कई सूत्रोंके स्थान पर अपने लम्बे-लम्बे सूत्र बनाकर सरलता ला दी है, वहीं दूसरी ओर उन्होंने पाणिनिके लम्बे सूत्रोंको तोड़कर उनके स्थान पर कई छोटे-छोटे सूत्र बना दिये हैं। उनका वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है :—

१. एक सूत्रके स्थान पर दो सूत्र। यथा—

पाणिनि—'राजाहःसखिभ्यष्टच्' (५।४।९१)
शाकटायन—'राजन् सखेः' (२।१।१६९), 'अह्नः' (२।१।१७९)
पाणिनि—'नित्यमसिच् प्रजामेधयोः' (५।४।१२२)
शाकटायन—'अस्प्रजायाः' (२।१।१९७), 'अल्पाच्च मेधायाः' (२।१।१९८)
पाणिनि—'पूतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्ढञ्' (४।३।५६)
शाकटायन—'दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यहेर्ढण्' (३।१।११८), 'आस्तेयम्' (३।१।११९)
पाणिनि—'यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्' (५।२।३९)
शाकटायन—'एतदो वो घः' (३।३।६९), 'यत्तदः' (३।३।७०)
पाणिनि—'बहुगणवतुडति संख्या' (१।१।२३)
शाकटायन—'घड्डति संख्या (१।१।९), 'बहुगणं भेदे' (१।१।१०)
हाणिनि—'आद्यन्तौ टकितौ' (१।१।४६)
शाकटायन—'टिदादिः' (१।१।५३), 'किदन्तः' (१।१।५४)
पाणिनि—'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (२।४।८३)
शाकटायन—'नातः' (१।२।१५६), 'अमपञ्चम्याः' (१।२।१५७)
पाणिनि—'तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्' (२।४।८४)
शाकटायन—'तृतीया वा' (१।२।१५८), 'सप्तम्याः' (१।२।१५९)
पाणिनि—'पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्' (२।३।३२)
शाकटायन—'पृथग्नाना तृतीया च' (१।३।१९२), विनेमास्तिस्रः' (१।३।१९३)
पाणिनि—'निसमुपविभ्यो ह्वः' (१।३।३०)
शाकटायन—'सन्निवेः' (१।४।३०), 'उपात्' (१।४।३१)
पाणिनि—'ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे' (५।४।७४)
शाकटायन—'ऋक्पूःपथ्यपोत्' (२।१।१३९), 'धुरो नक्षस्य' (२।१।१४०)

२. एक सूत्रके स्थान पर तीन सूत्र। यथा—

पाणिनि—'विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम्' (२।४।१२)
शाकटायन—'अश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराः' (२।१।९५), 'पशुव्यञ्जनानि (२।१।९६),
'तरुतृणधान्यमृगपक्षिबह्वर्थाशः' (२।१।९७)
पाणिनि—'दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्वणिकजैह्माशिनेयवाशिनायनिभ्रौणहत्यधैवत्यसारवैक्ष्वाकमैत्रेयहिरण्मयानि' (६।४।१७४)
शाकटायन—'दण्डिहस्तिनः फे' (२।३।५९), 'वाशिजिह्माश्यध्वाथर्वयूनः फिढखठाके (२।३।६०),
'भ्रौणहत्यधैवत्यसारवैक्ष्वाकमैत्रेयहिरण्मयम्' (२।३।११२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. एक सूत्रके स्थान पर चार सूत्र । यथा—

पाणिनि—'अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहर्क्सामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवो र्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तन्दिवरात्रिन्दिवाहर्दिवसरजसनिःश्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजातोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः' (५।४।७७)

शाकटायन—'जातमहद्वृद्धादुक्षणः कर्मधारयात्' (२।१।१५९), 'स्त्रियाः पुंसो द्वन्द्वाच्च' (१५९), 'धेन्वनडुहर्ग्यजुषाहोरात्रनक्तन्दिवरात्रिन्दिवाहर्दिवोर्वष्ठीवपदष्ठीवाक्षि भ्रुवदारगवम्' (१६०)

४. दो सूत्रोंके स्थान पर पाँच सूत्र । यथा—

पाणिनि—'शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्' (३।२।१४१), 'सम्पृचानुरुधाङ्यमाङ्यसपरिसृसंसृजपरिदेविसंज्वरपरिक्षिपपरिसृपखिदपरिदहपरिमुहदुषद्विषद्रुहदुहयुजाक्रीडविविचत्यजरजभजातिचरापचरामुषाभ्याहनश्च' (३।२।१४२)

शाकटायन—'शमष्टकदुषद्विषद्रुहदुहयुजत्यजरजभजाभ्याहनानुरुधो घिनन्' (४।३।२४२), 'आङः क्रीड्यं यस्मुषः' (४।३।२४३), 'समः पृच्सृजज्वरोऽकर्मकात्' (४।३।२४४), 'चरोऽतौ च, (४।३।२४७), 'परेः सृवद्दहमुहः' (४।३।२४९)

अनुवृत्ति, विकल्पों, अर्थविशेषों तथा निपातनोंकी दृष्टिसे शाकटायनके इन प्रयासोंका विस्तृत अध्ययन अत्यावश्यक है ।

शाकटायन व्याकरणमें एक सौ साठ सूत्र ऐसे हैं जो पाणिनीय सूत्रोंके तुल्यवर्तनीक हैं । उनमें कुछ लम्बे सूत्र भी हैं । इस प्रकारके सूत्रोंके विषयमें भी यह अध्येतव्य है कि शाकटायनने जिस प्रक्रियासे पाणिनीय सूत्रोंको तोड़कर कई सूत्र बनाये हैं क्या उस प्रक्रियासे इन समानवर्तनीक सूत्रोंके लम्बे सूत्रोंका योगविभाग किया जा सकता है ?

अपने व्याकरणको पृथुलतासे बचानेके लिये शाकटायनने पाणिनीय व्याकरणकी भाँति वार्त्तिकोंको अलग नहीं पढ़ा । कात्यायन रचित वार्त्तिकोंमें बिखरे सभी नियमोंको शाकटायनने सूत्रोंमें निबद्ध कर लिया ताकि अध्येताओंको पृथक्शः वार्त्तिकोंके स्मरणकी आवश्यकता न पड़े । वार्त्तिकोंके इन नियमोंके लिये शाकटायनने स्वतन्त्र सूत्रोंकी रचना नहीं की । किन्तु सम्बद्ध सूत्रोंमें ही वार्त्तिकोंके नियम पचा लिये हैं । लगभग तीन सौ सूत्र ऐसे हैं जो केवल वार्त्तिकोंके स्थान पर बनाये गये हैं ।

शाकटायन व्याकरण में अधिक संख्या ऐसे सूत्रोंकी है, जिनमें पाणिनीय सूत्रोंको बड़ी सूझ-बूझके साथ संक्षिप्त कर दिया गया है । ऐसा करने पर विषयवस्तु में कोई अन्तर नहीं आ पाया है । ऐसे सूत्रोंकी संख्या लगभग पन्द्रह सौ है ।

पाणिनीय व्याकरणका सम्पूर्ण तत्त्व पातञ्जल महाभाष्यमें निहित है । शाकटायन व्याकरणका अनुशीलन करनेसे ज्ञात होता है कि पाल्यकीर्तिने महाभाष्यका कितना तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया था और वे उसमें कितने नदीष्ण हो गये थे । उन्होंने अपने सूत्रोंमें महाभाष्यकी इष्टियां तथा उसके सभी वचन या वार्त्तिक पचा लिये हैं । इष्टियोंकी संख्या अधिक नहीं मिलती, पर भाष्यवचनोंकी संख्या लगभग पैंतीस है । शाकटायन ने उन्हें छाँटकर सूत्रबद्ध कर दिया है ।

पाणिनीय व्याकरणमें गणसूत्र भी विद्यमान हैं, जिनका अध्ययन अध्येताको सूत्रों तथा वार्तिकोंसे अलग करना पड़ता है । शाकटायनने उनके नियमोंको भी यथास्थान सूत्रबद्ध कर लिया है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिसप्रकार पाणिनिने पूर्व प्रचलित सम्पूर्ण व्याकरणोंका परिशीलन कर अपना स्वोपज्ञ व्याकरण बनाया था, उसी प्रकार काशिकाकारने अपने कालमें प्रचलित सम्पूर्ण वृत्तियोंका अनुशीलन कर काशिकावृत्ति की रचना की थी। अतः महाभाष्यके अनन्तर काशिकावृत्तिका अधिक महत्त्व है। व्याकरण-नियमोंकी पूर्तिके लिए वह व्याकरण शृंखलाकी एक कड़ी है। इसके महत्त्वको समझ कर पाल्यकीर्तिने काशिकावृत्तिके लगभग चालीस महत्त्वपूर्ण वचनोंके भी सूत्र बना दिये हैं।

पाणिनीय व्याकरणकी अपेक्षा शाकटायनने धातुपाठमें भी वैशिष्ट्य रखा है। (कृदन्त प्रकरणमें) पाणिनीय साधित शब्दोंके अतिरिक्त शब्दोंकी सिद्धियाँ शाकटायन व्याकरणमें दृष्टिगोचर होती है (द्रष्ट०- 'गोचरसंचर०' सूत्रमें 'खल' 'भग' शब्द)।

इतनी अधिक सामग्रीको शाकटायन व्याकरणमें कुल ३२३६ सूत्रोंमें ही सन्निविष्ट कर देनेका चमत्कारी प्रयत्न हुआ है। यक्षवर्माने अपनी व्याख्यामें ठीक ही लिखा है—'यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्'। एक दिनमें ९ सूत्रोंका स्मरण करने पर एक वर्षमें सम्पूर्ण व्याकरणका ज्ञान शक्य है।

लक्ष्य-लक्षण मिलकर व्याकरण बनता है। पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि तथा काशिकाकारके अनन्तर पाल्यकीर्तिके समयकी संस्कृत भाषामें महत्त्वपूर्ण परिवर्तन अवश्य हुए थे। बौद्धों और जैनों द्वारा रचे गये ग्रन्थोंकी संस्कृत भाषा अपना व्यक्तित्व लिये हुए थी। इसके अतिरिक्त शिष्ट समुदायमें बोली जाने वाली संस्कृतमें भी पर्याप्त परिवर्तन हुए होंगे। शाकटायनके आमूलचूल परिशीलनसे इनका पता चलता है।

इस प्रकार हमने देखा कि शाकटायन व्याकरणने संस्कृत भाषाके अध्ययनमें बहुत बड़ा सहयोग प्रदान किया है। अपने परवर्ती वैयाकरणोंको प्रेरणा प्रदान की है। हेमचन्द्रने अपने व्याकरणमें शाकटयनव्याकरण के कतिपय सूत्रोंको अविकल गृहीत कर लिया है। सूत्रानुसारी व्याकरणोंमें प्रक्रिया-पद्धतिकी नींव डालने का श्रेय शाकटायनको ही है। यद्यपि अध्यायोंमें विभक्त होनेके कारण यह व्याकरण अध्यायानुसारी ही है, तथापि अध्यायोंकी व्यवस्था विषयानुसारिणी है। समासान्त सूत्रोंको तत्पुरुषसमासके नियमोंके अनन्तर पढ़ा गया है। प्रक्रियाकौमुदी के रचयिता रामचन्द्र तथा वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीके रचयिता भट्टोजिदीक्षितने अपने ग्रन्थोमें इसी प्रक्रियाका अनुसरण किया है। 'अन्तिकबाढयानैंदसाधौं इत्यादि सूत्रोंके उदाहरणोंकी परीक्षासे इसका और भी निश्चय हो जाता है। इतने उपयोगी व्याकरणका लोकमें भूयिष्ठ प्रचार प्राप्त न कर सकनेका कारण है—दार्शनिक पृष्ठभूमिका अभाव। उसके लिए भर्तृहरि जैसे दार्शनिककी अपेक्षा थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org